धातु रूप और उसके प्रकार

प्राकृत व्याकरण में धातु रूप के स्वरूप का कथन किया गया है कि "क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं, और उसमें प्रत्यय जोड़ कर जो रूप बनाया जाता है, उसे धातु रूप कहते हैं। जैसे - 'पढ' क्रिया मूल धातु है। इसमें 'इ' प्रत्यय जोड़ देने से 'पढइ' धातु रूप बन गया जिसका अर्थ हुआ 'पढ़ता है।'

प्राकृत के धातु रूपों की प्रमुख विशेषताएँ →

प्राकृत के धातु रूपों की प्रमुख विशेषताएँ हैं, जो इस प्रकार हैं -

(1) प्राकृत के धातु-रूपों में एकवचन एवम् बहुवचन होता है, द्विवचन नहीं होता है।

(2) संस्कृत की तरह प्राकृत में तीन पुरुष होते हैं। यथा - प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष।

(3) व्यंजनान्त धातुओं में 'अ' विकरण जोड़ कर उन्हें स्वरान्त बनाया जाता है।

(4) इसमें कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य प्रायः एक समान होते हैं।

(5) इसमें आत्मनेपद का प्रायः लोप एवम् परस्मैपद रूपों की प्रधानता मिलती है। इसमें 'ल' कार नहीं होते हैं।

(6) केवल वर्तमान, भूत, भविष्यत, आज्ञार्थक, विध्यर्थक एवम् क्रियातिपत्ति के रूपों में छः कालों की प्रधानता मिलती है।

(7) आज्ञार्थक एवं विध्यर्थक तथा भूतकाल एवं क्रियातिपत्ति के रूपों में प्रायः समानता दृष्टिगोचर होती है।

(8) इसमें भ्वादिगण की प्रधानता मिलती है।

(9) 'अस्' धातु के वर्तमान, भविष्यत, विधि एवं आज्ञार्थक के सब पुरुषों एवम् सभी वचनों में (प्रत्ययों से) एक समान रूप मिलते हैं। केवल भूतकाल में एकवचन में 'अहे' और बहुवचन में 'अहेसि' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

इस प्रकार प्राकृत वैयाकरणों ने सभी कालों के सभी पुरुषों एवं वचनों के प्रत्यय (चिन्ह) को निर्धारित किया है, जिनकी सहायता से धातु रूप का गठन होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

धातु के प्रकार →

प्राकृत में संस्कृत की तरह 'लट्' आदि लकार नहीं होते हैं। इसमें केवल वर्तमान, भूत, भविष्यत्, विधि/आशार्थक एवम् क्रियातिपत्ति काल के छ: भेद माने गये हैं। इस प्रकार धातु रूप के छ: प्रकार हैं :- (1) वर्तमान काल (2) भूत काल (3) भविष्यत् काल (4) विधि-आज्ञार्थक (5) क्रियातिपत्ति।

धातु प्रत्यय या चिन्ह :-

— प्रत्येक काल के धातु प्रत्यय इस प्रकार हैं

वर्तमानकाल के धातु प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
पढमो पुरिसो प्र० पु०	इ, ए	न्ति
मज्झिम पुरिसो	सि	ह, इत्था
उत्तिमो पुरिसो (आ)	मि	(आ) मो

जैसे → पढइ - पढन्ति, पढसि - पढह, पढामि - पढामो।

भूतकाल के धातु प्रत्यय :

इसमें व्यंजनान्त धातुओं के साथ तीनों पुरुषों व वचनों में 'ईअ' और स्वरान्त धातुओं के साथ तीनों पुरुषों व वचनों में 'ही' और 'सी' प्रत्यय लगाते हैं।

व्यंजनान्त धातु के उदा० — पढ + ईअ = पढीअ

स्वरांत धातु के उदा० — हो + ही = होही,

हो + सी = होसी।

भविष्यत् काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्सइ, हिइ	स्संति, हिन्ति
म०	स्ससि, हिसि	स्सह, हिह
उ०	स्सामि, हिमि	स्सामो, हिमो

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner